PHILOSOPHY

Hons., Part III (Paper-VIII)

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431444351

बौद्ध दर्शन में ख्यातिवाद

→ बौद्ध दर्शन के योगाचार विज्ञानवादियों का भ्रम संबंधी सिद्धान्त आत्मख्यातिवाद या (विज्ञानख्यातिवाद) कहलाता है जबकि माध्यमिक शून्यवादियों का भ्रम संबंधी सिद्धान्त असत् ख्यातिवाद या शून्यताख्यातिवाद कहा जाता है।

आत्मख्यातिवाद या विज्ञानख्यातिवाद

→ इसके अनुसार विज्ञान (प्रत्यय) ही एकमात्र सत् है। इससे भिन्न, पृथक और स्वतंत्र बाह्य वस्तुओं का अस्तित्व नहीं है। वस्तुएं प्रत्ययमात्र हैं। ये आत्मनिहित प्रत्यय ही बाह्य पदार्थ का रूप लेकर बहिर्वत् प्रतीत होता है। चूँकि आत्मनिहित विज्ञान ही गलत प्रक्रिया के कारण बहिर्वत प्रतीत होता है, इसलिये इसके भ्रम सम्बन्धी सिद्धान्त को आत्मख्यातिवाद कहा जाता है।

→ आलोचना →

- आत्मख्यातिवाद को मानने पर यथार्थ ज्ञान एवं अयथार्थ ज्ञान के बीच भेद समाप्त हो जाता है।
- आत्मख्यातिवाद को मानने पर ज्ञान की सम्यक्-रूपेण विवेचना नहीं हो पाती। यहाँ ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय में भेद नहीं किया गया है। परिणामस्वरूप ज्ञान प्रक्रिया की आवश्यक शर्तें पूरी नहीं हो पाती।

Scanned with CamScanner

असत् ख्यातिवाद या शून्यता ख्यातिवाद

→ माध्यमिक शून्यवादियों का भ्रम सम्बन्धी सिद्धान्त असत् ख्यातिवाद कहलाता है। इनके अनुसार शून्य ही परमसत् है। इसके अतिरिक्त सभी असत् हैं। यहाँ ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय तीनों को असत् माना गया है।

→ यहाँ 'असत्' का आशय अस्तित्व विहीनता नहीं है। यहाँ इसका आशय है कि इनका कोई निश्चित, स्वतंत्र और निरपेक्ष अस्तित्व नहीं है। ये स्वरूपतः एवं स्वभावतः शून्य हैं। भ्रम में हमें असत् वस्तु का ही ज्ञान प्राप्त होता है। इसलिये इनका ख्याति संबंधी सिद्धान्त असत्ख्यातिवाद कहलाता है।

आलोचना –

- नैयायिकों के अनुसार शून्यवादियों के असत् ख्यातिवाद को नहीं माना जा सकता। यहाँ असत् के दो रूप संभव हैं–

(i) किसी ऐसी वस्तु का ज्ञान जिसका कहीं कोई अस्तित्व नहीं है।
(ii) किसी ऐसी वस्तु का ज्ञान जो संदर्भ में अनुपस्थित है, परन्तु कहीं अन्यत्र विद्यमान है।

यहाँ पहले विकल्प को नहीं माना जा सकता, क्योंकि हमें असत् वस्तु का ज्ञान नहीं होता। पुनः दूसरे विकल्प को मानने पर विपरीत ख्याति की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

यदि सभी पदार्थ एवं विषय असत् हैं तो फिर जिस प्रकार भ्रम का विषय असत् है, उसी प्रकार यथार्थ ज्ञान का विषय भी असत् होगा। ऐसी स्थिति में प्रमा की उत्पत्ति की व्याख्या नहीं की जा सकती।

Scanned with CamScanner